श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

श्रुत स्कन्ध विधान

aM{`Vm :

परम पूज्य साहित्य रत्नाकर क्षमामूर्ति

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	- **श्रुत स्कन्ध विधान**
कृतिकार	- **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति** **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**
संस्करण	- **द्वितीय-2012 ● प्रतियाँ :1000**
संकलन	- **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**
सहयोग	- **क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज** **ब्र. सुखनन्दनजी भैया**
संपादन	- **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी9660996425,** **सपना दीदी 9829127533**
संयोजन	- **किरण, आरती दीदी**
प्राप्ति स्थल	- **1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,** **2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर** **फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008** **2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार** **ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566** **3. विशद साहित्य केन्द्र** **C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी** **रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301**
मूल्य	- 2A

1/- रु. मात्र gm¡OÝ`go :

_wÐH$: amOy J«m{\$H$ AmQ>© (gS>Xm emh), जयपुर ● फोन: 2313339, मो: 9829050791

श्रुत स्तवन

दोहा – जिनवाणी को नमन् कर, करूँ तत्त्व का ज्ञान।
विशद भाव से कर रहे, श्रुत स्कंध विधान।।

द्वादशांग श्रुत ज्ञान है, अंग प्रविष्ट बाह्य।
भव्य जीव के लिए है, शुभ भावों से ग्राह्य।।

अष्टक (सुन्दरी छंद)

सोलह कारण भावना जिन, पूर्व भव में भाई जी।
मोक्ष पद के हेतु तीर्थंकर, प्रकृति शुभ पाई जी।।1।।

ज्ञान के अभ्यास से पाया है, एकत्व ध्यान जी।
नाश करके कर्म घाती, पाया केवल ज्ञान जी।।2।।

भव समुद्र से पार पाकर, करते सबको पार जी।
संसार सागर पार में होने, प्रभु इक आधार जी।।3।।

पुण्य का फल है शुभम् जो, तीर्थ पद जिन पाय जी।
सुर इन्द्र गण मिलकर सभी ने, समवशरण बनाय जी।।4।।

शुभ दिव्य ध्वनि सुनकर प्रभु की, होते भाव विभोर जी।
योजन शतक के प्राणियों मैं, हर्ष हो चऊँ ओर जी।।5।।

जिनदेव की वाणी मैं आया, काल दोष से ह्रास जी।
है एक अंग का अंश कुछ ही, श्रुत हमारे पास जी।।6।।

उस ज्ञान का आधार लेकर, पूजते श्रुतज्ञान जी।
भावों को अपने शुद्ध करना, आत्म का कल्याण जी।।7।।

श्री मोक्षपद का मूल है यह, द्रव्य भाव श्रुतज्ञान जी।
हो प्राप्त केवल ज्ञानश्रुत से, कर रहे गुणगान जी।।8।।

दोहा

तीर्थंकर की देशना, आगम रहा महान्।
गणधर ने वर्णन किया, द्रव्य भाव श्रुत ज्ञान।।

श्री श्रुत पंचमी पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र की दिव्य देशना, मंगलमय मंगलकारी।
स्याद्वाद अरु अनेकान्तमय, द्वादशांग युत मनहारी।।
श्री धरसेनाचार्य के मन में, जीवों पर करुणा जागी।
दिव्य देशना रहे सुरक्षित, मन में श्रेष्ठ लगन लागी।।
अंकलेश्वर में षट् खण्डागम, ग्रन्थ का लेखन हुआ शुरू।
लिपिबद्ध करने वाले थे, श्री पुष्पदन्त भूतबली गुरु।।
ज्येष्ठ शुक्ल दिवस पंचम को, पूर्ण हुआ श्रुत का लेखन।
पर्व बना श्रुत पंचम पावन, श्रुत का करते आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डा-गम ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डा-गम ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डा-गम ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

पुष्पाजलिं क्षिपेत्

ज्यों-ज्यों हमने जल पान किया, त्यों-त्यों आशा की प्यास जगी।
नित प्राप्त विषय विष भोगों से, बहु राग द्वेष की आग लगी।।
शुद्धातम सा परिशुद्ध अमल, यह नीर चरण में लाये हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पाप शाप में दवा रहा, निज आतम को न पहिचाना।
जो रहा स्वयं से भिन्न अन्य, उसको मैंने अपना माना।।
हम क्रोधानल के शमन हेतु, शुभ चंदन घिसकर लाये हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्ष विषय में लीन रहे, उनको ही अक्षय सुख माना।
अभिमान किया हमने तन का, अब अन्त रहा बस पछताना।।

अब मद की दम के दमन हेतु, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम बली का महा वेग, उसने सदियों से भरमाया।
निज शक्ति का नित ह्रास किया, औ मन में भारी हरषाया।।
हम काम बाण विध्वंस हेतु, शुभ पुष्प संजोकर लाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना व्यंजन का भोग किया, पर क्षुधा रोग न शांत हुआ।
ज्यों-ज्यों भोजन में लिप्त हुआ, त्यों-त्यों मेरा मन क्लांत हुआ।
चरणों नैवेद्य चढ़ाने को, व्यंजन कई सरस बनाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित दीपों के द्वारा भी, संसार तिमिर न घट पाता।
इन नश्वर दीपों के द्वारा, अज्ञान तिमिर न हट पाता।।
अब ज्ञान का दीप जलाने को, हम जग-मग दीप जलाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में दुःखों की अत्यन्त, दुखित ज्वाला जलती।
नित मोह कषायों की शक्ति, मम आतम को रहती छलती।।
हम धूप दशांगी शोधन कर, अग्नि में होम लगाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों को अमृत फल माना, उसके सेवन में मस्त रहा।
विषयों की चाहत में नित प्रति, मैं व्यस्त रहा अभ्यस्त रहा।।

अब मोक्ष महाफल की आशा ले, सरस श्रीफल लाये हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने काल अनादि से, सारे जग में भटकाया है।
है नहीं कष्ट कोई ऐसा, जग में रहकर न पाया है।।
आठों द्रव्यों को एक मिला, हम अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
सन्तप्त हृदय हो शांत विशद, हम जिनश्रुत शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम मम अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **अरि नाशक अरिहन्त हैं, जिनवाणी ॐकार।**
द्रव्य भाव श्रुत को नमूँ, करके जय-जयकार।।

जयमाला

हे जिनवाणी ! माता मेरी भक्तों पर दया प्रदान करो।
हम ज्ञान हीन अज्ञानी हैं, हम सबका अब कल्याण करो।।

श्री ऋषभ देव से महावीर तक, दिव्य ध्वनि खिरती आई।
गणधर जी ने गूंथित करके, इस भव्य जगत में फैलाई।।

महावीर के बाद केवली, दिव्य देशना दिए अनेक।
श्रुत केवली पाँच हुए फिर, उनने ज्ञान दिए अति नेक।।

अंग और पूरव के ज्ञाता, श्रेष्ठ हुए ग्यारह आचार्य।
पूर्वरहित कुछ हीन अंग के, ज्ञायक हुए सतत् आचार्य।।

जैनाचार्यों के द्वारा शुभ, श्रुत का निर्झर झरा अपार।
मोक्षमार्ग का भव्य जनों को, ज्ञान मिला है अपरम्पार।।

काल दोष के कारण लेकिन, जिनवाणी का ह्रास हुआ।
श्री धरसेनाचार्य गुरु के, मन में कुछ अहसास हुआ।।

द्वादशांग का लोप हुआ तो, क्या होगा संसार का।
अनेकांत का क्या होगा औ, क्या निश्चय व्यवहार का।।

लेखन हो जाए श्रुत का तो, अमर होएगी जिनवाणी।
श्रीधर सेनाचार्य ने मन में, लेखन करने की ठानी।।

अर्हद्वली आचार्य संघ से, दो मुनियों को बुलवाया।
पूर्ण परीक्षित करके उनसे, जिनवाणी को लिखवाया।।

लेखन हुआ ताड़पत्रों पर, षट्खण्डागम ग्रन्थ का।
अजर अमर हो गया सुयश, यह वीतराग निर्ग्रन्थ का।।

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस को, स्वप्न पूर्ण साकार हुआ।
घर-घर मंगल वाद्य बजे अरु, नगर-नगर जयकार हुआ।।

धवला टीका वीरसेन कृत, सहस बहत्तर श्लोक प्रमाण।
जय धवला जिनसेन वीर कृत, साठ हजार श्लोक प्रमाण।।

महाधवल है देवसेन कृत, हैं श्लोक चालीस हजार।
विजय धवल अतिशय धवल का, प्राप्त नहीं श्लोक विचार।।

क्रमशः ऋषि मुनियों के द्वारा, ग्रन्थ लिखे कई ज्ञान प्रधान।
चारों ही अनुयोग के द्वारा, दिया जगत को करुणा दान।।

श्रुत पारंगत विद्वत श्रेष्ठी, सबने श्रुत का किया विकास।
आगे भी सब ऋषि मुनि अरु, विद्वत श्रेष्ठी करें प्रकाश।।

जिनवाणी की भक्ति करे अरु जिनश्रुत की महिमा गाएँ।
सम्यक्दर्शन की निधि पाकर, सम्यग्ज्ञानी बन जाएँ।।

रत्नत्रय के आलम्बन से, वसु कर्मों का नाश करें।
मोक्ष मार्ग पर गमन करें फिर, सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट् खण्डागम जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा जिनश्रुत की पूजा करूँ, जिनश्रुत है गुणवन्त।
जिनश्रुत मेरे उर बसे, नमन् अनन्तानन्त।।

(पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

श्रुत स्कंध विधान

LFkkiuk

g ftuoj ok.kh tx dY;k.kh] Jh ftuin dh ojnkuhA
jRuk dh [kkuh] tkuh ekuh] djrh dek dh gkuhAA
Hkkok l /;kÅ ftu x.k xkÅ] Hkko lfgr e flj ukÅAA
e ân; clkÅ] 'kh"k >dkÅ] ftu in inoh dk ikÅAA
g ek ! x.k xk,] 'kh"k >dk,] rel ge vkf'k"k ik,A
u txr Hkek,] de u'kk,] f'ko l[k iku f'ko tk,AA

ॐ ह्रीं श्री अर्हं जिनेन्द्र कथित गणधरदेव रचित जिनागम अशेष ज्ञान सम्पूर्ण आगम अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

ujUn&NUn

ikl d ty xxk dk ydj] eu e vfr g"kk;A
n0; Hkko e; Jr dh itk] dju dk ge vk;AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA1AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र कथित दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।।

Hko rkik l rlr g, ge] dek l jg lrk,A
ije lxfU/kr pnu ydj] pj.k 'kj.k e ge vk,AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA2AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

[k.M&[k.M in e vVd g] in v[k.M u ik;A
v{k; in iku dk v{kr] v{k; ydj vk;AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA3AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

dkecyh d o'k e gkdj] lkjk tx HkVdk,A
dkeck.k fo/o'k gr ge] i"i eukgj yk,AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA4AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

{k/kk r"kk dh egk onuk] lgu ugh dj ik,A
{k/kk uk'k dju dk "kVjl] 0;tu ydj vk,AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA5AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

ekg frfej u ?kjk tx e] nj&nj Bkdj [kk,A
ekg egkre uk'k dju dk] nhi tykdj yk,AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA6AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

Hko Hko l ge HkVd jg g] vkBk de lrk,A
v"V x/k ;r /ki tyku] ro pj.kk e vk,AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA7AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

Qy dh bPNk ydj lkj] tx e ge Hkjek;A
ek{k egkQy iku gr] Jh Qy ydj vk;A
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA8AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

ty pnu vkfn n0;k dk] ,d feykdj yk,A
in vu?k iku d eu e] Hkko lrkdj vk,AA
ॐdkj e; ftuok.kh dk] viu ân; clk,A
iefnr gkdj fo'kn Hkko l] itk vkt jpk,AA9AA

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

t;ekyk

दोहा – fn0; /ofu dk >ydj] x.k/kj fd;k c[kkuA
HkfDr Hkko e; itrk] }kn'kkx Jr KkuAA

t; _"kHk no _f"koj i/kku] re ik;k doy Kku HkkuA
fQj fn0; n'kuk fd, no] 'kr bUn dj ro pj.k loAA
Øe'k pkfcl ftu fn;s Kku] og ftuoj ik, ek{k HkkuA
dkfrd dh veko'k ikrdky] cu x;k ohj fuok.kdyAA
fQj lk> le; xkre euh'k] tk fo'kn Kku d g, b'kA
vuc) doyh g, rhu] tk fut vkre e g, yhuAA
db doyKkuh g, lr] Jr/kkjh ikp g, llrA
fQj vkpk;k u fn;k Kku] db g, lr Kkuh egkuAA
lc ekf[kd fd, /kekin'k] /kjlu d eu e yxh BlA
gk jgk Kku dk cgr gkl] vxk'k Kku Fkk mudi iklAA
og lkp le> dhUgk fopkj] vc fy[kk tk, rRok dk lkjA

vg}yh th vkpk;l egku] tk lc lrk e Fk i/kkuAA
rc fy[kdj Hkstk 'kHk ln'k] nk lr Hkkft, Kkuh fo'k"kA
vk x;s Hkkrcyh i"inr] Fk Kkuh /;kuh Je.k lrAA
x:oj dk tk lEeku fd,] Jr fo|k x# inku fd,A
og Jr dk fyfic) dhUg] Jr rkM i= ij fy[k nhUgAA
"kV[k.Mkxe l egkxUFk] tk Jr d ekuk ey e=A
;k Jr Kku gk x;k mfnr] gk x;s Hkkr lc gh iefnrAA
'kHk T;"B 'kDy ipeh fnol] cu x;k io ;k gh ojo'kA
rc HkDr lHkh fey t; cky] vkj ân; iVy d iV [kkyAA
fQj jFk ij 'kkL= lokj fd,] vkj uxj&uxj e ty fn,A
vk HkDrk d eu g"kk,] fQj i"i lxf/kr o"kk,AA
;g io cuk exydkjh] tk Jr Kku d vorkjhAA
ge Jr dh t; t;dkj dj] v# lokdj midkj djAA
ge Hkko lfgr x.kxku dj] 'kHk itu vkj fo/kku djA
ge 'kkL=k dk Hkh nku dj] fut vkre dk dY;k.k djAA

(छन्द घत्तानन्द)

दीजे सुख साता, ज्ञान प्रदाता, श्रुत देवी तव नमन् करूँ।
अज्ञान नशाऊँ ज्ञान जगाऊँ, अपने सारे कर्म हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र दिव्यध्वनि सम्पन्न परम अंग बाह्य अंग प्रविष्टि रूप द्वादशांग श्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – ftuok.kh ftu Hkkjrh] redk d: i.kkeA
tukxe dk itdj] ikÅ efDr /kkeAA

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

efrKku dh Lrfr

(वीर छंद)

bfUn; eu d ;kx l gkrk, lE;d efrKku ikouA
voxg bgk vok; /kkj.kk] pkj Hkn vfr eu HkkouAA
cg&cgfo/k v# f{ki vfu%fJr] /ko vuDr d Hkh foijhrA
rhu lk NRrhl Hkn :i g] Hkfo thok dk g 'kHk ehrAA1AA

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भव गणधर गूंथित त्रि शत् षट् त्रिंशत् भेद रूप मति ज्ञानाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

JrKku dh Lrfr

ftuoj dfFkr lx.k/kj xfFkr] vx vxckg; Jr KkuA
}kn'k Hkn vud Hkn e;] Kk;d·uUr fo"k; l[k /kkeAA
vudkr v# L;k}kn e;] Jr dk djr ge x.kxkuA
JrKku dk oUnu ejk] dju vkre dk dY;k.kAA2AA

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भव गणधर गूंथित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

,dkn'k vx o.ku

vkpkjkx efu p;k dk] ftle g lEi.k dFkuA
lfefr xfIr or 'kf) dk Hkh] ble g ijk o.kuAA
lgl vBkjg in g blds] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;l p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA3AA

ॐह्रीं अष्टादश सहस्र पद भूषित प्रथम आचारांग श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ntk l= drkx 'kHke g] Kku fou; dk ftle lkjA
D;k g dYi vdYi Kkue;] /ke :i dlk 0;ogkjAA
ftld in NRrhl lgl g] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;l p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA4AA

ॐह्रीं षट्त्रिंशत् सहस्र पद भूषित द्वितीय सूत्र कृतांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

LFkkukx rhljk in g] n[k 'kk/k Fky ij pyukA
,d&,d nk :i g ikou] 'kCn vFk e; gh <yukAA
in C;kyhl lgl g ftld] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;l p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA5AA

ॐह्रीं द्विचत्वारिशित् सहस्र पद भूषित तृतीय स्थानांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

pkFkk leok;kx 'kkL= g] n0; {k= v# Hkko i/kkuA
/kek/kekdk'k tho d] vl[; in'k dk jgk iek.kAA
,d yk[k pkSB gtkj g] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;l p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA6AA

ॐ ह्रीं एक लक्ष चतुः षष्ठि सहस्र पद भूषित चतुर्थ समवायांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ipe vx 0;k[;k iKfIr] foKku e;h tk g ikouA
lkB gtkj i'u thokfnd] mÙkj lfgr tk eu HkkouAA
yk[k nk; vVBkb l lgl e;] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA7AA

ॐ ह्रीं द्वय लक्ष अष्टविंशति सहस्र पद भूषित पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

rhFkdj vkfn i#"kk d] oHko x.kk dk fd;k dFkuA
Kkr /ke dFkkx g "k"Ve] /ke dFkkvk dk o.kuA
ikp yk[k Nliu gtkj in] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA8AA

ॐ ह्रीं पंच लक्ष षड् पंचाशत् सहस्र पद भूषित ज्ञातृ धर्म कथांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

llre vx mikldk/;;u] Jkod p;k dk o.kuA
ey x.kk v# dÙk0;k dk] ftle g lEi.k dFkuAA
X;kjg yk[k lÙkj gtkj 'kHk] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA9AA

ॐ ह्रीं एकादश लक्ष सप्तति सहस्र पद भूषित सप्तम उपासकाध्यनांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vUr% dr n'kkx v"Ve g] milx fot; dk dj idk'kA
ifr rhFkdj dky e n'k&n'k] vUr% dr dofy dk okl AA
rhl yk[k vVBkb l gtkj 'kHk] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA10AA

ॐ ह्रीं त्रयोविंशति लक्ष अष्टाविंशति सहस्र पद भूषित अष्टम अन्तः कृतदशांग अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vuÙkjkiikfnd n'kkx uoe g] fot;kfn vuÙkj e okl A
ifr rhFkdj dky e n'k&n'k] milx fot; dk dj idk'kAA

yk[k ckuo lgl pokyhl] Jr in dk e flj ukÅA
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA11AA

ॐ ह्रीं द्वय नवति चतुः चत्वारिंशत् सहस्र पद भूषित नवम अनुत्तरोपपादिक दशांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

i'u0;kdj.k vx n'ke g] i'ukÙkj ;r i.k dFkuA
vk{ki vkj fo{kiokn dk] ftle g ijk o.kuAA
frjkuo yk[k lkyg gtkj 'kHk] Jr in dk e flj ukÅ A
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA12AA

ॐ ह्रीं त्रि नवति लक्ष षष्टदश सहस्र पद भूषित दशम व्याकरणांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

foikd l= 'kHk vx ,dkn'k] i.; iki Qy dk |krdA
fgr vkj vfgr 'kHkk'kHk dk tk] 'kkL= ije g m|krdAA
,d djkM lyk[k pkjklh] Jr in dk e flj ukÅ।
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA13AA

ॐ ह्रीं एक कोटि चतुः अशीति लक्ष पद भूषित विपाक सूत्रांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

nf"Vokn g }kn'kkx tk] feF;kre dk g uk'kdA
=lB lfgr rhu lk er dk] uk'kd g ftu ijdk'kdAA
lk v# vkB dkfV y[k vMlB] Nliu gtkj in fl ukÅA
v"V n0; e; v?;! p<kÅ] /;kÅ xkÅ g"kkÅAA14AA

ॐ ह्रीं अष्टाधिक शत् कोटि अष्ट षष्टि लक्ष षट्पंचाशत सहस्र पंच पद भूषित दृष्टिवाद श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

}kn'k vx g JrKku e;] mudk viu mj e /kkjA
v?;! p<ko HkfDr Hkko l] o gk tkr Hko l ikjAA
lk v# }kn'k dkfV frjklh] yk[k vVBkou lgl v# ikpA
budk Hkko Kku dju l] {k; gkrh g Hko dh vkpAA15AA

ॐ ह्रीं द्वादशाधिक शत् कोटि अ्यसीति लक्ष अष्ट पंचाशत सहस्र पंच पद भूषित सर्व द्वादशांग श्रुतज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

nf"Vokn d Hkn

¼enkofylr diky NUn½

nf"Vokn d Hkn ip] ifjde ifke gA
f}rh; l= vu;kx] iokxr Hkh vuie gAA
ipe Hkn pfydk tkuk] Jr x.k/kj dkA
}kn'kkx dY;k.k e;h g] tx d uj dkAA16AA

ॐ ह्रीं पंच भेद सहित दृष्टिवादांग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Hkn ikp ifjde d] pUn iKfIr tkuA
f}rh; l;l iKfIr v#] tEc}hi rrh;kuAA
nhi len iKfIr pm] 0;k[;k ipe ekuA
Jr dh itk dj lnk] gk dek dh gkuAA17AA

ॐ ह्रीं पंचभेद सहित परिकर्म सूत्र श्रुतज्ञानाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

Hkn pUn iKfIr e] pUn vk;q ifjokjA
_f) fcEc Åpkb xfr] vkfn dk lc lkjAA
in NRrhl ly{; ;r] ip lgl iek.kA
v?;l p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA18AA

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत् लक्ष पंच सहस्र पद भूषित प्रथम चन्द्र प्रज्ञप्ति परिकर्मश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निः स्वाहा।

Hkn l;l iKfIr e] Hkkx vk;q dk lkjA
_f) fcEc Åpkb xfr] vkfn dFku dk lkjAA
ikp yk[k v# fr; lgl] g Jr dk ifjek.kA
v?;l p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA19AA

ॐ ह्रीं पंच लक्ष त्रि सहस्र पद भूषित द्वितीय सूर्य प्रज्ञप्ति परिकर्मश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

tEc nhi iKfIr e] uj i'k ng dk lkjA
Hkkx Hkfe v# de Hk] Hk/kj dk foLrkjAA
rhu yk[k iPphl lgl] Jr dk g 0;k[;kuA
v?;l p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA20AA

ॐ ह्रीं त्रि लक्ष पंचविंशति सहस्र पद भूषित तृतीय जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति परिकर्मश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

nhi len iKfIr e] lkxj nhi iek.kA
ukuk fo/kh inkFk dk] i.k dFku igpkuAA
in Jr ckou yk[k g] lgl NRrhl iek.kA
v?;l p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA21AA

ॐ ह्रीं द्वि पंचाशत् लक्ष षट्त्रिंशत् सहस्र पद भूषित चतुर्थ दीप समुद्र प्रज्ञप्ति परिकर्म श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

g 0;k[;k iKfIr e] /kek/kekdk'kA
Hk0;kHk0; lthon v#] dky n0; vfouk'kAA
in pkjklh yk[k g] lgl NRrhl iek.kA
v?;l p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA22AA

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्ष षट्त्रिंशत् सहस्र पद भूषित पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति परिकर्म श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ikp Hkn ifjde d] g ifl) Jr KkuA
gr lE;d Kku d] tx e lo egkuAA
dy in l[;k dkfV v#] yk[k bD;klh tkuA
ikp gtkj fuy; d] ftu vkKk dk KkuAA23AA

ॐ ह्रीं एक कोटि एकाशीति लक्ष पंच सहस्र पद भूषित पंच परिकर्म श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

f}rh; Hkn ln l= e] tho vcU/kd tkuA
dRrkHkkDrk Hkh ugh] feF;k er dk KkuAA
in vVBklh yk[k g] ftu Jr e 0;k[;kuA
v?;l p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA24AA

ॐ ह्रीं अष्टाशीति लक्ष पदभूषित द्वितीयसूत्र अधिकार श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

rrh; iFkekuq;kx e] i.; dFkk dk lkjA
='kB 'kykdk i:"k dk] ftle g foLrkjAA

in g ikp gtkj ij] Hkkjh efgekokuA
v?;| p<kÅ Hkko lk] ikÅ lE;d KkuAA25AA

ॐ ह्रीं पंच सहस्र पद भूषित प्रथमानुयोग श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

pkng iio o.ku

pkng Hkn lio d] mRikn vxk;.kh tkuA
oh;l okn vfLr&ukfLr v#] Kku lR; ifgpkuAA
vkRe de iR;k[;ku vk] dY;k.k fo|kuoknA
ik.kok; fØ;k fo'kky v#] ykdfcUn lkj iioknAA

¼i"ik tfy f{kir½

¼jkyk NUn½

iFke Hkn mRikn iio e] inxy n0; dkA
thok d mRikn dFku] Lo:ikfnd dkAA
g djkM in dkfV oLr n'k] lk ikHkr xk,A
ftuok.kh dk HkfDr Hkko l] 'kh"k >dk,AA26AA

ॐ ह्रीं एक कोटि पद भूषित प्रथम उत्पाद पूर्व श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

f}rh; vxk;.kh iio e] Lole; dFku gA
fØ;k okn dh fdfj;k dk] lUnj n'ku gAA
pkng oLr nk lk vLlh] ikHkr xk,A
yk[k fN;kuo in HkfDr e;] 'kh"k >dk,AA27AA

ॐ ह्रीं षड्नवति लक्ष पद भूषित द्वितीय अग्रायणीय पूर्व श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

oh;kuokn e NneLFkk dk] fd;k dFku gA
vkReoh;l ij oh;l 'kfDr] dk Hkh o.ku gAA
vkB oLrxr oLr 'kr] ol ikHkr xk,A
lRrj yk[k lin e] viuk 'kh"k >dk,AA28AA

ॐ ह्रीं सप्तति लक्ष पद भूषित तृतीय वीर्यानुवाद पूर्व श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vfLr ukfLr iokn e] u; d Hkn crk,A
vfLr ukfLr vkj vfLrdk;] d Hkn fxuk,AA
v"Vkn'k oLr =; 'kr] vLlh ikHkr xk,A
lkB yk[k in dk HkfDr] e; 'kh"k >dk,AA29AA

ॐ ह्रीं षष्टि लक्ष पद भूषित चतुर्थ अस्ति–नास्ति प्रवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Kkuiokn e vkBk Kkuk dk] o.ku gA
bfUn; vkfn d Hknk dk] fnXn'ku gAA
oLr ckjg Hkn ;Dr 'kr] ikHkr xk,A
in g ,d djkM Hkkolk] 'kh"k >dk,AA30AA

ॐ ह्रीं नव नवति लक्ष नव नवति सहस्त्र नव शत् नव नवतिपद भूषित पंचम ज्ञान प्रवाद पूर्व श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

"k"Ve lR; iokn e] lR;klR; dFku gA
Hkko opu xfIr v# lR; dk] fnXn'ku gAA
}kn'k oLr Hkn fd pkfyl] ikHkr xk,A
in g ,d djkM Hkko lk] 'kh"k >dk,AA31AA

ॐ ह्रीं एक कोटि पद भूषित षष्टम सत्य प्रवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vkReiokn e vkRe n0; dk] dFku eukgjA
"kV dkf;d thok dk o.ku] fd;k g lUnjAA
oLr lkyg fo'kfr =; 'kr] ikHkr xk,A
in NfCcl dkfV e] ge lc 'kh"k >dk,AA32AA

ॐ ह्रीं षड्विंशति कोटि पद भूषित सप्तम आत्म प्रवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

de iokn e de cU/k 'kr] mn; crk;A
fFkfr mnhj.kk 'kfDr uk'k dh] dFkuh xk,AA

chl oLr xr tku pkj lk] ikHkr xk,AA
in g ,d djkM Hkko l] 'kh"k >|dk,AA33AA

ॐ ह्रीं एक कोटि अशीति लक्ष पद भूषित अष्टम कर्म प्रवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

uoek iR;k[;ku iki dk] g ifjgkjhA
fu;e ifrØe ri vkjk/ku] or dk /kkjhAA
rhu oLr xr tku pkj lk] ikHkr xk,A
in g ,d djkM Hkko l] 'kh"k >|dk,AA34AA

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्ष पद भूषित नवम प्रत्याख्यान पूर्व श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

fo|kuokn e e= r=] fo|k dh flf)A
len?kkr jTt jkf'k dh] {k= iflf)A
oLr iUng tku rhu lk] ikHkr xk,A
,d yk[k n'k in e] viuk 'kh"k >|dk,AA35AA

ॐ ह्रीं एक कोटि दश लक्ष पद भूषित दशम विद्यानुवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

dY;k.k okn e l;l pUn] u{k= dh ppkA
i|.; i#"k dk dFku vkj dY;k.kd dh vpkAA
oLrxr g n'k nk lk ftu ikHkr xk,A
in NCCkhl djkM Hkko lk 'kh"k >|dk,AA36AA

ॐ ह्रीं षड्विंशति कोटि पद भूषित एक दशम कल्याणवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ik.k okn e LokLF; vkj bl ru dk o.kuA
v"Vkx vk;okn vkj ik.kk;ke d y{k.kAA
oLrxr g n'k nk lk ftu ikHkr xk,A
rjg dkfV lin e Hkko lk 'kh"k >|dk,AA37AA

ॐ ह्रीं त्रयोदश कोटि पद भूषित द्वादशम प्राणवाद पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

fØ;k fo'kky e dk0;] f'kYi y[ku vk fo|kA
dyk cgRrj uj ukjh e pk lB fo|kAA
oLrxr g n'k lk n'k ftu ikHkr xk,A
uk djkM in e Hkkok l 'kh"k >|dk,AA38AA

ॐ ह्रीं नव कोटि पद भूषित त्रयोदशम क्रिया–विशाल पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ykd fcUn 'kHk lkj e] ol 0;ogkj dk o.kuA
Jr lEifÙk ifjde] xf.kr jkf'k dk y{k.kAA
oLrxr n'k g nk lk] ftu ikHkr xk,A
<kbl dkfV in e] Hkkok l 'kh"k >|dk,AA39AA

ॐ ह्रीं द्वादश कोटि पंचाशत् लक्ष पद भूषित चर्तुदशम् लोक बिंदुसार पूर्व श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vMlB 'kr bd oLrxr] ikHkr rhu gtkjA
Ng lk vMlB tkM dj] dfj, rRo fopkjAA
yk[k ipkl l ikp in] v: ipkuo dkMA
pkng io dk v?;] n] HkfDr Hkko dj tkMAA40AA

ॐ ह्रीं सर्व एक शत् अष्टषष्ठि वस्तुगत त्रि सहस्र षट्शत् अष्टषष्ठि प्राभृत मय पंच नवति कोटि पंचाशत् लक्ष पंच पद भूषित चतुर्दश पूर्व श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ip pfydk o.ku

दोहा – ty Fky ek;k xrk v#] :ixrk vkdk'kA
ip Hkn e; pfydk] nf'Vokn d [kklAA

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

¼xhrk Nn½

ty xrk ty e xeu] LrHkukfn ri egkA
'kHk e= r= vkfn dk o.ku] ohj u ftle dgkAA
in dkfV nk] uk yk[k mU;kLh lgl nk lr l iuA
e HkfDr l dj tkj fouÅ ;kx =; eu opu ruAA41AA

ॐ ह्रीं द्वय कोटि नव लक्ष एकोन अशीति सहस्र द्वयशत् पंच पद भूषित प्रथम जलगता चूलिका श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Fky xrk Fky e xeu] 'kHk&v'kHk dh ppk jghA
'kHk e=&r= ti&ri l p;k] dh ljy dFkuh dghAA
in dkfV nk uk yk[k mU;kLh] lgl }; lr l iuA
e HkfDr lk dj tkj fouÅ] ;kx =; eu opu ruAA42AA

ॐ ह्रीं द्वय कोटि नव लक्ष एकोन अशीति सहस्र द्वयशत् पंच पद भूषित द्वितीय थलगता चूलिका श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ek;k xrk ek;k dk o.ku] bUnztky fo|k egkA
'kHk e= r= ti&ri l p;k] dk ljy o.ku jgkAA
in dkfV }; uo yk[k mU;kLh] lgl }; lr l iu]
e HkfDr lk dj tkj fouÅ] ;kx =; eu opu ruAA43AA

ॐ ह्रीं द्वय कोटि नव लक्ष एकोन अशीति सहस्र द्वयशत् पंच पद भूषित तृतीय मायागता चूलिका श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

:i xrk g v'o ex flg] fp=dkj v# /kkr e;A
'kHk r= e= yikfn dk o.ku] i.k jgk ftle fu'p;AA
in dkfV }; uo yk[k mUuklh] lgl }; lr l iuA
e HkfDr lk dj fouÅ] ;kx =; eu opu ruAA44AA

ॐ ह्रीं द्वय कोटि नव लक्ष एकोन अशीति सहस्र द्वयशत् पंच पद भूषित चतुर्थ रूपगता चूलिका श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vkdk'k xrk ipe l Hkn 'kHk] uHk e xeu Fky le jgkA
'kHk ;= r= v: ri'p;k] dk dFku ftle dgkAA
in dkfV }; uo yk[k] mU;kLh lgl lr }; l iuA
e HkfDr lk dj tkj fouÅ] ;kx =; eu opu ruAA45AA

ॐ ह्रीं द्वय कोटि नव लक्ष एकोन अशीति सहस्र द्वयशत् पंच पद भूषित पंचम आकाश गता चूलिका श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

¼ohj Nn½

ip pfydk dh l[;k dk o.ku djr g ftu b'kA
n'k djkM lyk[k vMrkfyl] lgl fN;kuo v# iPphlAA
JrKku dk iku gr] v?;! lefir djrk euA
Jr Kkuh cu tkÅ Hkxou] Hkko lfgr djrk ituAA46AA

ॐ ह्रीं दश कोटि अष्ट चत्वारिंशत् लक्ष षट् नवति सहस्र पंचविंशति पद भूषित पंच चूलिका श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

n`"Vokn d lo Hkn dh] l[;k dk djr x.kxkuA
,d vjc ol dkfV lkB g] yk[k lgl v# rhl iek.kAA
Jr Kku dk iku gr] v?;! lefir djrk euA
Jr Kkuh cu tkÅ Hkxou] Hkko lfgr djrk ituAA47AA

ॐ ह्रीं अष्टाधिक शत् कोटि षष्टि लक्ष षट् सहस्र पद भूषित पंच भेद परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग पूर्वगत चूलिका सहित दृष्टिवाद श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vxk;.kh iol dh Hkn

¼vfMY;&NUn½

vxk;.kh iol d Hkn vc tkfu,A
vkuiohl d uke vFk ifgpkfu,AA
ln iek.k oDr0; vkj vf/kdkj gA
n0; Hkko Jr dk tk 'kHk vk/kkj gAA

¼tk×hjkI k pky½

vkuqiwoh d rhu Hkn g] igyk iokuqiwohA
ntk i'pkrkuqiwoh g] rrh; ;FkkrF;kuqiwohAA
yke foyke ifrykse Hkn g] IØe vØe tkukA
Hkn vkj ifr Hkn cgr g] Jqr Kku Ic ekukAA48AA

ॐ ह्रीं प्रथम आनुपूर्वी त्रय भेद युक्त श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ftIdk }kjk vFk Kku gk] mIdk uke dgk gA
n0; fufefÙkd fØ;k fufefÙkd] vkfn :i jgk gAA49AA

ॐ ह्रीं द्वितीय अर्थ भेद श्रुत ज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

g iek.k d Hkn cgr I] ykfdd ykdkÙkj vknhA
Lo ij idk'kd Hkh dgykrk] ie; iekrk Jqr oknhAA50AA

ॐ ह्रीं तृतीय प्रमाण भेद श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

g oDr0; d Hkn vuqdk] L;k}kn I gk ifgpkuA
vYi 'kCn e vFk vuUrd] L;kr I gk oLrq dk KkuAA51AA

ॐ ह्रीं चतुर्थ वक्तव्यता भेद श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

tk fuf'pr gkrk g mIdk] Ink dgk tkrk g vFkA
mudk tk vf/kdkj dgk g] dFku jgk g fofo/k IeFkAA52AA

ॐ ह्रीं पंचम अधिकार भेद श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vFkkf/kdkj d Hkn

vFk vf/kdkj d Hkn] dg g pkng HkkbA
Ikekf;d Lrou oUnuk ifrØe.k mikbAA
oSuf;d d'frde vkj 'kkHk egkdYi gA
mÙkjk/;;u v: n'kodkfyd dYI;kdYi gA
dYi0;ogkj v# egk fu"kf/kdk i.Mjhd gA
egki.Mjhd vkj idh.kd exyhd gA

।। इति पुष्पाजलिं क्षिपेत्।।

idh.kd ¼vx cká½ d Hkn

¼ohj NUn½

igyk Ikekf;d Ierke;] IDy'k fcu Ifo/k fopkjA
iki ;kx dk i.k R;kxdj] dky Hkko g ftIdk IkjAA
ukeLFkkiuk n0; {k= mi Ix] vkfn e Ierk HkkoA
ufg eeRo g eu e fdfpr] IE;d n'ku e; LoHkkoAA53AA

ॐ ह्रीं प्रथम सामायिक प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

f}rh; ILrou pkfcI ftu dk] oUnu Ifgr Ifo/k ILFkkuA
vfr'k; v: dY;k.kd dk 'kHk] ftIe o.ku g vfHkjkeAA54AA

ॐ ह्रीं द्वितीय संस्तवन प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

rrh; oUnuk ,d&,d ftu] dh ILrfr dk voyEcuA
vuie ftIe dFku fd;k g] pR; pR;ky; dk oUnuAA55AA

ॐ ह्रीं तृतीय वन्दना प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ifrØe.k pkFkk iekn fcu] IIr Hkn ;qr foey egkuA
jkf= fnoI i{k pkekfIdj] okf"kd ;qx mRre ifgpkuAA56AA

ॐ ह्रीं चतुर्थ प्रतिक्रमण प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ouf;d Hkn ipe exye;] fou; Hkko g ip idkjA
n'ku Kku pkfj= Irqi v:] ipe dgk Hkn mipkjAA57AA

ॐ ह्रीं पंचम वैनयिक प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

"k"Be n'kodkfyd ikou] ;fr vkpkj dk ftIe IkjA
ckg; fØ;k gk IE;d Ikjh] ugh yx oqr e vfrpkjAA58AA

ॐ ह्रीं षष्टम दशवैकालिक प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

drhdeI IIre e itu] ije"Bh ikpk dk IkjA
f'kjkufr iHkq dh inf{k.kk] }kn'k vkorI vkfn foLrkjAA59AA

ॐ ह्रीं सप्तम कृतिकर्म प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

v"Ve mÙkjk/;;u g vu|ie] ckbl ifj"kg t; y{k.kA
pm i|dkj ijdr mi l x t ;] dju dk ft le o.kuAA60AA

ॐ ह्रीं अष्टम उत्तराध्ययन प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

uoe dYi&0;ogkj i|dh.kd] ;kX; vkpj.k ;kX; fØ;kA
nk"kk d ik;f'pÙk dh fof/k v#] i|[;kr lk/k dh lo fØ;kAA61AA

ॐ ह्रीं नवम कल्प–व्यवहार प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

dYI;kdYi i|dh.kd n'kok] lE;d pkfjr dk 0;k[;kuA
n0;{k= v:dky Hkko l] ;kX;k;kX; dj /kj /;kuAA62AA

ॐ ह्रीं दशम कल्प्याकल्प्य प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

egkdYi X;kgjok tkuk] 'kfDr lguu efu d ;kX;A
n0; {k= vkfn dk o.ku] Hkko R;kx dj jgk v;kX;AA63AA

ॐ ह्रीं एकादशम महाकल्प प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ckgjok i|.Mjhd Hkou v#] 0;Urj T;kfr"k dYikpkjA
nok d mRikn dk dkj.k] R;kx l|ri or dk vk/kkjAA64AA

ॐ ह्रीं द्वादशम पुण्डरीक प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

egki|.Mjhd vx rjgok] bUn i|rhUnk dk mRiknA
l|ri /;ku vkpj.k vkfn 'kHk] mÙke or gkr g KkrAA65AA

ॐ ह्रीं त्रयोदशम महापुण्डरीक प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

pkngok g Hkn fu"kf/kdk] ikf'pÙkkfn iekn o.kuA
lcd x.k nk"kk dk Kk;d] dHkh u gk fQj Hkko ej.kAA66AA

ॐ ह्रीं चतुर्दशम निषधिका प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vx ckã d Hknk dh v{kj l|[;k

vx ckã d Hkn l| pkng] dh v{kj l|[;k gk KkrA
ol| dkfV y[k ,d lgl ol|] 'krd ipgÙkj g l|[;krAA
yk[k iPph l lgl rhu v#] rhu 'krd vLlh 'ykdA
iUng v{kj lfgr tkfu,] vx ckã dk g lc ;kxAA67AA

ॐ ह्रीं चतुर्दशम निषधिका प्रकीर्णक श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vFk fyx l|Jr d chl Hkn
¼Hkko Jr Kku½

'kHke vFk fyx l|Jr d g] mÙke chl Hkn l|[k /kkeA
^fo'kn* Hkko l djr g ge] mudk ckjEckj i|.kkeAA
i;k; v{kj in l?kkr v#] ifrifÙk g 'kHk vu;kxA
ikHkfrd&ikHkfrd v# ikHkfrd] oLr| io lfgr n'k ;kxAA
lo lekl lfgr gku ij] chl Hkn dh l|[;k tkuA
ftu Jr d g Hkn vudk] l|[;krhr vuUr iek.kA

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

i;k; Kku g fuokj.k] fuxkfn;k thok e Hkh jgrkA
v{kj dk vuUrok Hkkx g] fuR;kn?kkfVr gk cgrkAA68AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त पर्यय भाव श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

i;k; Kku d Åij v{kj] JrKku d ijc ioA
ftru Hkn Kku d gkr] i;k; lekl dgyk, vioAA69AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्य ध्वनि प्राप्त श्री पर्यय समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vkfn Jr Kku dk cU/k] dgr g v{kj Jr KkuA
uj fi'kkp vkfn ik.kh lc] djr g bldk lEekuAA70AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्य ध्वनि अक्षर भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

v{kj Kku d Åij lkj] l|in Kku d ijc ioA
ftru Hkn Kku d gkr] v{kj lekl dgyk, vioAA71AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त अक्षर समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ft l d }kjk vFk ck/k gk] og dgykrk in Jr KkuA
vFk l in e/;e iek.k in] rhu Hkn e; gkrk tkuAA72AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त पद भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

l in Kku d Åij lkj] l?kkr Kku d ijc ioA
ftru Hkn Kku d gkr] in lekl dgyk, vioAA73AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त पद समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

,d xfr dk o.kU djrk] dgykrk g og l?kkrA
xR;kxfrd Hkn dh l[;k] gk tkrh g mll KkrAA74AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त संघात भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

l?kkr Kku d Åij lkj] ifrifÙk lKku d ioA
ftru Hkn Kku d gkr] l?kkr lekl dgyk, vioAA75AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त संघात समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

l[;krk l?kkr feykdj] gkrk ifrifÙk Jr KkuA
pkj xfr dk ftle gkrk] lkjk dk lkjk 0;k[;kuAA76AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त प्रतिपत्तिक भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ifrifRr d Åij lkj] vu;kx Kku d ijc ioA
ftru Hkn Kku d gkr] ifrifRr lekl dgyk, vioAA77AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त प्रतिपत्तिक समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

l[;krk ifrifÙk feydj] gkrk g vu;kx i/kkuA
pkng ekxk.kkvk dk Hkh 'kHk] ftll gk tkrk g KkuAA78AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त अनुयोग भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vu;kx Kku d Åij lkj] ikHkr&ikHkr Kku d ioA
ftru Hkn Kku d gkr] vu;kx lekl dgyk, vioAA79AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त अनुयोग समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

vu;kx e v{kj dh of)] djd prjkfn vu;kx
of) gku ij gk tkrk] ikHkr&ikHkr Hkn l;kxAA80AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त प्राभृतक–प्राभृतक भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ikHkr&ikHkr e v{kj dh] of) l gkrk Jr KkuA
ikHkr&ikHkr lekl dgykrk] dgrk ohrjkx foKkuAA81AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त प्राभृतक–प्राभृतक समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

pkch l ikHkr&ikHkr feydj] curk g ikHkr Jr KkuA
Jh ftuUn u tukxe e] blds fd;k 'kHke 0;k[;kuAA82AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त प्राभृतक भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ikHkr e v{kj c<+) l] of)xr gkrk Jr KkuA
ikHkr lekl dgyk;k ikou] _f"kx.k djr g x.kxkuAA83AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त प्राभृतक समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

chl&chl ikHkr feydj d] cu tkrh g oLr ,dA
,d lk ipkuo oLr dk Qy] dgk pkng iok e udAA84AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त वस्तु भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

oLr e v{kj of) l] of)xr gkrk Jr KkuA
oLr lekl dgykrk vuie] vkxe e ;g jgk fo/kkuAA85AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त वस्तु समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'kkL= vFk dk ik"kd g tk] dgk x;k io JrKkuA
Hkko lfgr Jr dk vkjk/kd] ijEijk l gk x.kokuAA86AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त पूर्व भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

iko Kku of)xr gkdj] cu tkrk g iko lekIA
ohrjkx foKkuh cudj] dj nrk dek dk uk'kAA87AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त पूर्व समास भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ådkje; fn0; n'kuk] ijekxe g n0; lKkuA
fut vuHko prU; fpÙk e] Hkko Kku l gk dY;k.kAA
n0; Kku dk ludj eu e] Hkko g, tk Hkh ikouA
***fo'kn* Hkko Jr gvk vykfdd] Jr dk djr vfHkuUnuAA88AA**

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्राप्त अर्थ लिंग विंशति भेद सहित भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

pkj vu;kx

iFkeku;kx e i.; i:"k dh] thou xkFkk dk o.kuA
ckf/k lekf/k dk fu/kku g] v# ijk.k dk J"B dFkuAA89AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि प्रथमानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

;xin ykdkykd >ydrk] prxfr dk 'kHk o.kuA
dj.kku;kx 'kkL= dk djr] dj.k&pj.k }kjk oUnuAA90AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि करणानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

euh vkj Jkod dh p;k] dk ftll gkrk g KkuA
pj.kku;kx 'kHk dgk x;k og] tk g ohrjkx foKkuAA91AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि चरणानुयोग रूप श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

thokth o lrRo dg g] cU/k ek{k l i.; v# ikiA
n0;ku;kx 'kkL= d }kjk] budk tku yhft, vkiAA92AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि द्रव्यानुयोग रूप श्रुत ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

fn0; n'kuk Jh ftuUn dh] pÅ vu;kx Lo:i dgh A
iFkeku;kx 'kHk dj.k pj.k] v# n0;ku;kx Lo:i jghAA93AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि चऊ अनुयोग स्वरूप सम्पूर्ण श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

}kn'kkx Jr dh in l[;k

,d lk ckjg dkfV frjklh yk[k lgl g vVBkouA
ikp ink l ;Dr Kku dk] ^fo'kn* Hkko l vfHkuUnuAA94AA

ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित गणधर गूंथित द्वादशांग श्रुत द्वादशाधिक शत् कोटि त्र्यशीति लक्ष अष्ट पंचाशत् सहस्र पंच पद रूप श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ey ,o l;kxh v{kj

ikdr o.k ekyk d pklB] l;kxh v{kj g [;krA
dky vukfn l of.kr g] vkxe l gkrk g KkrAA
,d vkB pÅ&pÅ "kV llre] pm&pm 'kU; llr =; lkrA
'kU; vkj uo ikp&ikp bd] Ng bd ikp jg fo[;krAA
;g dy cht iek.k vd g] /kU; jg vkxe Jr KkuA
rhu ;kx l ueu gekjk] jg ân; e budk /;kuAA95AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत गणधर गूंथित सम्पूर्ण मूल एवं संयोगी अक्षर स्वरूप श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'kCn Jr[kyk l fufer gk] dgykrk g og Jr KkuA
n0; Hkko Jr Hkn jg nk] gkr nkuk Kku iek.kAA
inxy n0; :i v{kje;] tk Hkh g Jr dk o.kuA
n0; lJr dgykrk ikou] Jr dk g 'kr&'kr oUnuAA96AA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्य ध्वनि प्राप्त द्रव्य भाव श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

tki% ॐ ह्रीं Jh ftu e[kknHkr n0; Hkko Jr :i ljLorhn0; ue% LokgkA

t;ekyk

दोहा – **ftuok.kh dk ueu dj] dkV tx tatkyA**
Jr Kku dh Hkko l] xkr g t;ekyAA

(ताटंक छन्द)

lkyg dkj.k Hkk; Hkkouk] cu tkr rhFkdj noA
de ?kkfr;k uk'k fd, fQj] suUr pr"V; ikr ,oAA

,d {k= e rhFkdj ftu] ,d dky e gkr ,dA
_"kHkukFk l egkohj rd] doyKkuh g, vudAA
f[kjrh fn0; n'kuk ikou] Ådkj e; fn0; vuiA
vu{kjh gkdj v{kje;] tho le>r fut vu:iAA
lo egk Hkk"kk v"Vkn'k] lkr 'krd Hkk"kk, 'k"kA
v/k ekx/kh Hkk"kk e gk] Jh ftuok.kh dk min'kAA
Ng&Ng ?kMh fn0; /ofu }kjk] rhu dky e gk min'kA
Hk0; tho d i.; ;kx l] vle; e Hkh gk; fo'k"kAA
x.k/kj >y d jpuk djr] fHkUu egr e fHkUu idkjA
'k"k le; e 0;k[;k djr] Hkfo thok dk y vk/kkjAA
Hk0; tho ludj ftuok.kh] djr ;Fkk&;kX; J)kuA
Kku vkj pkfj= ikIr dj] djr fut vkre dk /;kuAA
doy Kkuh dk gkrk g] v{k; doy Kku vuUrA
fn0; n'kuk e f[kjrk g] ml vuUr dk Hkkx vurAA
fn0; /ofu e ftruk f[kjrk] x.k/kj >y ik, dN v'kA
x.k/kj u ftruk >yk g] mldk jp ikr dN v'kAA
egkohj dk 'kklu g ;g] mudh ok.kh dk g KkuA
xkre Lokeh u >yh g] fn0; n'kuk lg lEekuAA
ek{k xeu ij egkohj d] xkre u dhUgk min'kA
ckjg ckjg o"k l/kekpk;] u] nhUgk 'kHk&lin'kAA
tEc Lokeh o"k l vMfrl] rd Hk0;k dk nhUgk KkuA
vU; doyh Jh/kj vkfn u] dhUgk tx dk dY;k.kAA
fo".k ufUnfe= vijkftr] Jr doyh xko/kuAA
Hkncckg rd ikp lk o"kk] djr jg Jr dk o.kuA
X;kjg vx io n'k /kkjh] X;kjg g, efujkt i/kkuA
bd'kr rjkslh o"kk rd] Kku nku n fd;k egkuAA

nk lk rhl o"k e X;kjg] vx egk/kkjh _f"kjktA
Jh u{k= t;iky ik.M] /ko lu dsl ikpk efujktAA
Jh lHkn ;'kkHkn vkj ;'kk ckg ykgkpk;] euh'kA
bd'kr v"Vkn'k o"kk e] vkpkjkx /kj g, _'kh"kAA
vx io /kkjh efu;k dk] ckn e bld gvk fo;kxA
,d vx d dN v'kk dk] dN lrk u ik;k ;kxAA
dUn&dUn /kjlu x: v#] i"inUr Jh Hkrcyh A
vkxe d Kkrk lrk l] Jr dh /kkjk vx pyhAA
uxj vdy'oj e ikou] "kV [k.Mkxe jpk egkuA
i"inUr vkj Hkrcyh u] fyfic) dhUgk Jr KkuAA
T;"B 'kDy ipeh lfnu dk] 'kkL= y[k dk gvk fojkeA
cuk io dk fnu exye;] Jr ipeh iMk 'kHk ukeAA
exye; ftuok.kh ekrk] thou exye; dj nkA
lE;d n'ku Kku pj.k l] ân; l?kV ejk Hkj nkAA
nk gedk vk'kh"k g ekrk!] mj e Hkjk Hkn foKkuA
Loij Hkn foKku d }kjk] fo'kn Kku l gk dY;k.kAA
;Fkk 'kfDr Jr dk vkjk/ku] fd;k Hkko l tk x.kxkuA
g ekrk! e d:¡ oUnuk] 'kh?k ikIr gk in fuok.kAA

(छन्द घत्तानन्द)

t; t; ftu pnk vkuUndUnk] fn0; /ofu ro ikou gA
t; JrLdU/kk lx.k vuUrk] Jr Kku eu Hkkou gAA

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत दिव्यध्वनि सम्पन्न सम्पूर्ण परम श्रुतज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – ftuok.kh dk itdj] ân; tx J)kuA
v"Vde dk uk'k dj] ikÅ doy KkuAA

(इत्याशीर्वाद) पुष्पांजलि क्षिपेत्